Lecture - 137.

पाल कला की विशेषताओं का आलोचनात्मक अध्ययन

– Mamta Rani
Guest Assistant Prof.
Deptt. of History.
SNSRKS College,
Saharsa.

BA part - 2nd
Paper - 2nd.

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

अंगो पर विशेष ध्यान दिया गया। इस समय बौद्ध धर्म की महायान शाखा से संबंधित अधिकांश मूर्तियों का निर्माण किया गया। जैसे - जातक कथाओं से संबंधित मूर्ति इसके साथ ही अन्य धर्मों से संबंधित देवी देवताओं की मूर्तियों का भी निर्माण हुआ है।

मूर्ति कला के विशेषता के अन्तर्गत काले पत्थर का प्रयोग भी शामिल किया जाता है जो मुंगेर और राजमहल की पहाड़ियों मे आसानी से उपलब्ध था। पत्थर की मूर्ति के साथ-साथ धातु की मूर्ति का भी निर्माण किया जाता था जिसके अन्तर्गत ऐसा तकनीक विकसित था जो हड़प्पा सभ्यता मे भी दिखाई पड़ता है। धातु की मूर्ति का सर्वप्रमुख क्षेत्र कुकिहार है और पत्थर की मूर्ति का प्रमाण नालंदा एवं राजगीर से मिला है।

मूर्ति कला के साथ-साथ चित्रकला का भी विकास हुआ है जिसमे पाण्डुलिपि के रूप मे और भित्ति चित्र के रूप मे यह दिखाई पड़ता है। इसमे गाढ़ा एवं हल्का रंग का प्रयोग होता था। पाल चित्रकला की पाण्डुलिपी पंचरक्ष और अष्टसहस्त्र प्रज्ञा-पारमिता अभी भी कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय मे सुरक्षित है। भित्ति-चित्र का नमुना नालंदा महाविहार के अवशेषो मे देखा जा सकता है। धीमन और विटपाल दो प्रमुख कलाकार थे।

चित्रकला के साथ-साथ स्थापत्य कला का विकास भी इस समय हुआ। गुप्तकालिन नालंदा महाविहार को संरक्षण दिया जाता था और धर्मपाल ने विक्रमशीला तथा गोपाल ने ओदंतपुरी और सोमविहार का निर्माण कराया।

पाल वंश के शासको ने कला के क्षेत्र मे जो कार्य किया उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि यही है कि इसका अनुकरण विश्व के अनेक देशो मे जैसे- बर्मा, तिब्बत, नेपाल, जावा-सुमात्रा आदि देशो ने किया। यह कला किसी नविन प्रयोग का परिचायक नही है फिर भी इस काल मे पाल वंश के शासको ने भारतीय कला एवं संस्कृति को देश के साथ-साथ विदेशो मे पहुँचा दिया। यह बहुत बड़ी देन है।

* * *

— — —

* * *

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz

Q. पाल कला के मुख्य विशेषताओं का आलोचनात्मक वर्णन

पालकला के मुख्य विशेषताओं की आलोचनात्मक वर्णन कीजिए।

उत्तर:

पाल कला

मूर्ति कला
- पत्थर की मूर्ति
- धातु की मूर्ति
- मानविय अंगो पर विशेष ध्यान

* सार्वधिक बौद्ध धर्म से संबंधित मूर्ति।
* इसके बाद अन्य धर्म
* विशेषता - काले पत्थर का प्रयोग

चित्रकला
- पाण्डुलिपि के रूप मे
  * गाढ़ा एवं हल्का रंग का प्रयोग
  - (i) अष्टसहस्रप्रज्ञापारमित
  - (ii) पंचरक्ष
  - कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय
- भित्तिचित्र (दीवारों पर चित्रांकन)
  * नालंदा महाविहार

स्थापत्य कला
- नालंदा महाविहार
- विक्रमशिला महाविहार — धर्मपाल
- उदंतपुरी महाविहार — गोपाल
- सोमपुर महाविहार — गोपाल

→ बौद्ध धर्म

आलोचना: किसी भी प्रकार का नया नही बल्कि यह पहले से चला आ रहा था।

निष्कर्ष:- फिर भी बिहार बंगाल के क्षेत्र मे अमुल्य देन है

प्राचीन काल मे पाल वंश के शासकों की राजनीतिक उपलब्धि के लिए कम लेकिन कला एवं संस्कृति के लिए अधिक याद किया जाता है। इनलोगो ने बिहार और बंगाल के क्षेत्र पर शासन किया लेकिन अपने भारतीय संस्कृति की कला के माध्यम से विदेशो मे भी पहूँचा दिया। पाल कला को अध्ययन की सुविधा के लिए हमलोग तीन भागो मे विभाजित कर सकते है:-

पाल कालिन शासकों ने मूर्तिकला को मध्यकाल के प्रारंभ मे एक विकसित स्वरूप प्रदान किया जो बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया। इन मूर्तियों के निर्माण मे मानविय

Be AatmaNirbhar. Use Kaagaz